International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-07-2025, Accepted: 23-08-2025, Published: 08-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 75-80

संस्मरण' अर्थ, अवधारणा एवं अन्य गद्य विधाओं से अंतर्संबंध

श्रीमती वीणा पांडे
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग, करामत हुसैन मुस्लिम गर्ल्स पीजी कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
संस्मरण आधुनिक हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विद्या है। इसमें सामान्यतः किसी महान व्यक्ति, स्थान अथवा घटना को रचनाकार स्मृति के आधार पर शब्दबद्ध करता है । बालमुकुंद गुप्त द्वारा 1907 में प्रताप नारायण मिश्र पर लिखे संस्मरण को हिंदी का पहला संस्मरण माना जाता है । कालांतर में द्विवेदीयुग, छायावाद तथा उत्तर आधुनिक काल की यात्रा करते हुए संस्मरण विधा आज साहित्य जगत की प्रतिष्ठित गद्य विधा बन गई है। संस्मरण का अर्थ 'सम्यक् स्मरण' से किया जाता है। इसी कारण इस विधा का अन्य गद्येतर विधाओं से भी अंतरसंबंध देखा जाता है । जिसमे रेखाचित्र इसके सबसे अधिक सन्निकट देखी जाती है। दोनों में इतनी समरूपता है कि इनमें भेद स्थापित करना अत्यंत दुष्कर कार्य जान पड़ता है। इसी प्रकार से कहानी, आत्मकथा जीवनी, यात्रावृत्त आदि की भी आधारशिला इसी संस्मरण को माना जाता है । यही कारण है संस्मरण सभी विधाओं में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अंतर्भूत है। प्रस्तुत लेख में संस्मरण के अर्थ, अवधारणा,प्रकृति के साथ–साथ अन्य विधाओं के साथ साम्य वैषम्य एवं अंतर्संबंध को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः संस्मरण का अन्य गद्य विधाओं से साम्य–वैषम्य और अंतर्संबंध

हिंदी गद्य के विकास के पूर्व काव्य –ग्रंथों में भी संस्मरण को प्राकृतिक रूप से देखा जा सकता है । संस्मरण की प्राचीनतम् परंपरा हम चरित्रकाव्यो में सहज रूप से देख सकते हैं चरित काव्यो का संपूर्ण ताना–बाना स्मर्ण्यमाण तत्वों से ही बुना गया है। इसी प्रकार प्रबंध काव्य में अभिव्यंजित वस्तु–वर्णन की परंपरा का आधार भी यही संस्मरणात्मक प्रवृति रही है । ऐतिहासिक नाटकों की आधारशिला भी इसी संस्मरणात्मक वृति पर आधारित है । सभी पात्र स्मृति आधारित वस्तुवर्णन करते दिखाई देते हैं 'सूरसागर' में वर्णित 'भ्रमरगीत–परंपरा' भी गीति शैली में लिखा गया है यह भी प्रकारातर से एक संस्मरणात्मक गीत है जहां गोपियो के द्वारा पूर्व स्मृतियों के आधार पर कृष्ण के प्रति विरह–वेदना के इस गीत को गया है। इस विधा का सबसे बड़ा आकर्षण यह होता है कि इसमें रचनाकार द्वारा व्यक्तिगत अनुभवों को अत्यंत प्रभावात्मकता के साथ चित्र–शैली में प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही रचनाकार का पूर्वघटित घटनाओं के परिणाम स्वरुप होने वाला अनुभव काल्पनिक ना होकर सत्य वाचन होता है इसमें संदेह का लेशमात्र स्थान नहीं होता बल्कि रचनाकार का उद्देश्य घटनाओं के महत्वपूर्ण पक्ष को उद्घाटित कर अपने किसी लक्ष्य तक पहुंचाने का प्रयास होता है।

संस्मरण रचनाकार द्वारा पूर्व स्मृतियों का आत्मीयता पूर्ण निवेदन है। किसी घटना, स्थान अथवा व्यक्ति के विषय में जब स्मृतियों के आधार पर जो कुछ भी लिखा जाता है वह संस्मरण कहलाता है । वह पूर्णरुप से तथ्यात्मक होता है, काल्पनिक नहीं। पाठक तक पहुंचने वाली समस्त सूचना पूर्ण विश्वसनीय होती है ।

साहित्य जगत की विधाओं के मूलतः दो अंतरभेद हैं

1. प्रधान साहित्यिक विधा
2. गौड साहित्यिक विधा

प्रधान साहित्यिक विधाओं में कहानी,नाटक, उपन्यास, कविता, आलोचना तथा निबंध आदि विधाओं को रखा जाता है; तथा साहित्य की गौड विधाओं में आत्मकथा,जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत, रिपोर्ताज, डायरी तथा अभिनंदन–पत्र आदि की गणना की जाती है । संस्मरण एक ऐसी गद्य विधा है जो आत्मकथा,रिपोर्ताज, डायरी, यात्रावृत्त जैसी गौड विधाओं के रचना की तो आधार है ही प्रत्युत् कथा, कहानी ,उपन्यास और निबंध के भी कलेवर को गढ़ने में संस्मरण का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान नकारा नहीं जा सकता।

संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति

मानक हिंदी कोश के अनुसार 'संस्मरण' शब्द वास्तव में दो शब्दों के मेल से बना है

स्मृ धातु+सम् उपसर्ग ल्युट (अन) प्रत्यय अर्थात

स्मृ+सम+अन=स्मरण। जिसका अर्थ है सम्यक् स्मरण या भली भांति तरीके से किया गया स्मरण (सम्यक् स्मृति) अर्थात सहज आत्मीयता पूर्वक किसी व्यक्ति घटना दृश्य अथवा वस्तु इत्यादि का पूर्ण रूपेण स्मरण करना तथा उसे आत्मीयता पूर्ण शैली में शब्दबद्ध की गई रचना को संस्मरण की श्रेणी में रखा जा सकता है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्मरण विधा का मूल आधार स्मरण या स्मृति ही है।

इसी प्रकार से विश्व हिंदी कोर्स में संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति को को इस प्रकार से बताया गया है–सम+स्मृ+ल्युट्(अण)= स्मरण जिसका अर्थ है –पूर्ण स्मरण /खूब याद/ अच्छी तरह से नाम लेना /या सुमिरन करना /

अन्य अर्थ––संस्कार जन्य ज्ञान

स्मरण का अंग्रेजी अर्थ––मेमॉयर/ रेमिनिसेजेज आदि।

संस्मरण की परिभाषा

संस्मरण शब्द के अर्थगत वैशिष्ट्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विद्वानों ने संस्मरण विधा को परिभाषित करते हुए अपना विचार इस प्रकार अभिव्यक्त किया है

हिंदी साहित्य के प्रथम संस्मरण लेखक श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने भी संस्मरण के निकटवर्ती अन्य विधाओं के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए संस्मरण को इस प्रकार से परिभाषित करते हैं

गोविंद स्वामी त्रिगुणायन जी ने संस्मरण की व्याख्या बड़ी ही भावात्मक शैली में किया गया है उन्होने इसे इस प्रकार से परिभाषित किया गया है –

"भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेतशैली में अपने व्यक्तित्व की विशिष्ठाओं से विशिष्ट बनाकर रोचक ढंग से यथार्थ रूप मे व्यक्त करता है ; तब उसे संस्मरण कहते हैं ।" [1]

संस्मरण और रेखाचित्र विधा की प्रख्यात हस्ताक्षर महादेवी वर्मा जी ने भी अवचेतन मन में पड़ी हुई पूर्वस्मृतियों को ही प्रधानता देते हुए संस्मरण की प्रकृति के बारे में वे इस प्रकार लिखती है "इन स्मृति चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है । यह स्वाभाविक भी था । अंधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की ध्वनि या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं उसके बाहर तो वे अनंत अंधकार के अंश है ।" [2]

साहित्य खंड मे डॉ नगेंद्र ने संस्मरण को "वैयक्तिक अनुभव तथा स्मृति से रचा गया इतिवृत्त अथवा वर्णन के रूप में स्मृति की महत्ता को स्वीकार किया है ।" और संस्मरण विधा को उसकी विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकित करते हुए इस प्रकार से परिभाषित किए है "साहित्यिक,सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में कार्य करने वाले विख्यात व्यक्ति स्वभावतः जब किसी अन्य महापुरुष अथवा विशिष्टता संपन्न सामान्य पुरुष के संबंध में चर्चा करते हैं अथवा स्वयं के जीवन के किसी अंश को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करते हैं तब संस्मरण का जन्म होता है ।संस्मरण अतीत को सजीव करते हैं ।"[3]

डॉक्टर नगेंद्र के द्वारा संस्मरण के स्वभावगत वैशिष्ट्य को स्पष्ट करते हुए 'हिंदी साहित्य कोश' में इसे विस्तार पूर्वक व्याख्यायित किया है "लेखक इसमें अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है परंतु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप से वह बिल्कुल अलग है; संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता है जिसका स्वयं अनुभव करता है । उसी का वर्णन करता है । उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियां, अपनी संवेदनाएं डूबी रहती हैं ।

आगे इसी ग्रंथ में उन्होंने संस्मरण के संबंध में स्मृति और व्यक्ति विशेष के संबंध में पूर्व स्मृतियों के ताने–बाने को एक निश्चित भाव भूमि पर लिखने की शैली को संस्मरण कहते हुए इस प्रकार से इसे परिभाषित किया है 'स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित लेख या ग्रंथ को संस्मरण कह सकते हैं।"[4]

डॉ0 राजमणि शर्मा जी ने संस्मरण को परिभाषित और व्याख्यायित करते हुए 'साहित्य के रूप' नामक पुस्तक में इस प्रकार से लिखा है "हिंदी साहित्य में 'ऑटोबायोग्राफी' और 'मेमायर्स' दो भिन्न विधा के रूप में विकसित हुए हैं जिन्हें क्रमशः आत्मकथा तथा संस्मरण साहित्य कहा जा सकता है आत्मकथा में संस्मरण की आवश्यकता होती है लेकिन उसे संस्मरण की संज्ञा देना युक्ति संगत नहीं लगता । वस्तुतः संस्मरण मेंमायर्स का सही प्रतिनिधि है पर आंशिक मात्र ही ।[5]

उपरोक्त डॉ शर्मा के द्वारा संस्मरण की दी गई परिभाषा को और अधिक अर्थवत्ता के साथ स्पष्ट करते हुए 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' में कहा गया है ––मेमायर्स (संस्मरण) का रचनाकार ऐसा युग पुरुष हो सकता है जिसने देश के इतिहास के निर्माण में प्रमुख भूमिका अदा की हो या जिसे इतिहास निर्माण को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ हो।"[6]

संस्मरण के तत्व

साहित्यकारों द्वारा संस्मरण की दी गई परिभाषाओं की व्याख्यात्मक अध्ययन करने के से संस्मरण की प्रकृति अथवा रचना–तत्व स्वतः ही उजागर हो गया है जिसकी आधार शिला आधार पर संस्मरण–लेखन का कार्य व्यवस्थित ढंग से हो सकता है तथा स्मृति, व्यक्तित्व का चित्रण ,आत्मीयता, तथ्यात्मकता, भाव–प्रवणता, चित्रात्मकता, वैयक्तिकता,जीवनानुभवों का विशिष्ट–वर्णन तथा सत्यात्मकता आदि तत्वों के इर्द–गिर्द परिभ्रमण करता हुआ कथ्य अपने उद्देश्य तक पहुंचता है । संस्मरण के तत्व के रूप में इस प्रकार से समझ सकते हैं

वर्ण विषय

संस्मरण का जन्म अतीत की स्मृतियों के कोख से होता है । दूसरे शब्दों में संस्मरणों का कलेवर किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान से जुड़ी पूर्व स्मृतियों को आधार बनाकर शब्दबद्ध करना होता है । रचनाकार उसे पाठक के सामने जीवंतता के साथ प्रस्तुत कर देता है स्मृतियों का अपना एक वैशिष्ट्य होता है जहाँ रचनाकार द्वारा स्मृति में आ रहे व्यक्ति के चारित्रिक गुण–दोष को पूर्ण ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास होता है ;संस्मरणकार अपने जीवन में घटित कुछ विशिष्ट घटनाओं, कुछ अविस्मरणीय क्षणों अथवा हृदयतांत्री को झंकृत कर देने वाली स्मृतियों को अपना वर्ण विषय बनाता है जिसे पढ़कर पाठक भी रचनाकार के प्रभाव–मंडल में स्वयं को वहीं ना कहीं जोड़ लेता है । संस्मरण लेखक का वर्ण्य विषय उसका स्वयं का जीवन एवं जीवनानुभव से प्राप्त अनेकों घटनाएं तथा विशिष्ट व्यक्तित्व भी हो सकता है। रचनाकार स्वयं के द्वारा प्रभावित हुए किसी व्यक्तित्व का वर्णन संस्मरण के अंतर्गत करता है ।संस्मरण का वर्ण्यविषय (व्यक्तित्व) सदैव वास्तविकता पर आधारित होता है तथा तभी संस्मरणों की विश्वसनीयता प्रधान गुण के रूप में दिखाई देती है इसमें कल्पना का कोई स्थान नहीं होता। इस प्रकार से संस्मरण के वर्ण विषय को हम दो श्रेणियां में रख सकते हैं

पहला – व्यक्तित्व का चित्रण,

दूसरा – स्मृति और भाव प्रवणता का चित्रण। दूसरे शब्दों में संस्मरण व्यक्तिगत आख्यान होते हैं जो अपने लेखको के जीवन में विशिष्ट अनुभवो या अवधिओं पर केंद्रित होते हैं । वे प्रकृति में फोटोग्राफिक और पाठ्य दोनों हो सकते हैं और विषय व्यक्तिगत, यात्रा और करियर से लेकर सेलिब्रिटी और अस्तित्व तक कुछ भी हो सकते हैं

पात्र एवं चरित्र चित्रण

(घटना, स्थान एवं व्यक्तिआधारित) पात्र– योजना संस्मरण का प्रधान तत्व है। इसमें लेखक अपने जीवन में आए विशिष्ट व्यक्तियों घटनाओं तथा स्थान विशेष का स्मृतियों के आधार उसमें निहित चारित्रिक विशेषताओं को उकेरता हुआ एक ऐसा शब्दमय संसार खड़ा कर देता जिसको पढ़ कर पाठक विशिष्ट व्यक्ति के विषय में सम्यक जानकारी प्राप्त करता है। रचनाकार व्यक्ति के रूप में संपर्क में आए साहित्यकारों राजनेताओं समाजसेवियों (स्त्री अथवा पुरुष) आदि के जीवनचरित् को रचनाकार साहित्यिक शैली में प्रस्तुत करता है । संस्मरण विधा तत्वतः व्यक्ति विशेष पर आधारित होता है अतः उसमे वर्णित विशिष्ट व्यक्ति का चरित्रोद्घाटन अनिवार्य तत्व के रूप में देखा जा सकता है। संस्मरणकार का प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व का पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्ति प्रदान करना ही मुख्य कविकर्म होता है ।अर्थात लेखक अपने चरित्र नायक के जीवन के किसी एक प्रभावशाली घटना को लेकर विद्वतापूर्ण एव स्मरणीय शैली में उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का स्पष्टीकरण करना होता है । इसी में रचनाकार की विशिष्टता एवं कुशलता निहित होती है। संस्मरणो में चरित्रांकन प्रायः वर्णनात्मक शैली में किया जाता है । ऐसे में रचनाकार को अपनी प्रकृति एवं चरित्र का भी विश्लेषण कर पाने का अवसर मिल जाता है जिसके प्रकाश में वह वर्ण

विषय को लेकर अधिक आकर्षक एवं पारदर्शिता के साथ अभिव्यक्त करता है। संस्मरणकार का व्यक्तित्व उसके संस्मरण रचना में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। आचार्य रामचंद्र तिवारी ने "हिंदी गद्य साहित्य " में लिखते है' " संस्मरण लेखक यदि आलोचक है तो वह अपने चरित्र नायक की आलोचना किए बिना नहीं रह सकता वह किसी न किसी ढंग से टिप्पणी कर ही बैठता है । यदि कोई लेखक अंतर्मुखी प्रकृति का है या मनोविश्लेषण वादी है तो वह अपने नायक का मनोवैज्ञानिक ढंग से चरित्रांकन करता है तथा उसके रहस्य के झीने पर्दे को अपने यथार्थ रूप में समाहित कर पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है।"[7]

तथ्यात्मकता

संस्मरण विद्या पूर्व स्मृतियों का आत्मीयता पूर्ण निवेदन है । इसी कारण किसी घटना अथवा स्थान अथवा व्यक्ति के विषय में जब स्मृतियों के आधार पर लिखा जाता है ।तब यह भी परम आवश्यक है कि जो कुछ भी लिखा जा रहा हो वह पूर्ण रूपेण तथ्यात्मक (वास्तविक) हो, काल्पनिक नहीं ।अर्थात पाठक तक पहुंचने वाली समस्त सूचना पूर्ण विश्वसनीय हो। यही विश्वसनीयता संस्मरण रचना को श्रेष्ठ बनती है

परिवेश और वातावरण

किसी भी रचना को वास्तविकता के सन्निकट ले जाने में तत्कालीन घटना, परिवेश और वातावरण का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है साथ ही विषय को गति एवं विकासोन्मुख बनाने में भी वातावरण एवं परिवेश (समाज) का विशेष स्थान है । रचना चाहे व्यक्ति–केंद्रित हो अथवा घटना विशेष की हो दोनों ही सूरत में परिवेश एवं तत्कालीन वातावरण को केंद्र में रखकर वर्णित करने से पाठक उस परिवेश से सहज तादात्म्य स्थापित कर लेने मे सफल जाता है; यही तादात्म्य संस्मरण–लेखन की परम उपलब्धि है किंतु शर्त यह है कि रचनाकार द्वारा परिस्थितियों का चित्रण बलात् नहीं करना चाहिए बल्कि यह सहज रूप से अनायास हो जानी चाहिए। संस्मरणात्मक परिवेश का अंकन कलाकार के कलात्मक अभिव्यक्ति का परिचायक तथा उसके सूक्ष्म निरीक्षण कौशल का प्रमुख तत्व है। अर्थात रचनाकार का पूर्वघटित परिस्थितियो एवं वातावरण के प्रति संलिप्तता संस्मरणात्मक रचना को अधिक विश्वसनीय बनती है और सत्य के निकट ले जाती है ।

चित्रात्मकता एवं तटस्थता

मानव मन पर चित्रों का प्रभाव सबसे अधिक होता है और स्थाई भी । चित्रात्मक शैली किसी भी विषय को बोधगम्य बनाने का सबसे सरल साधन है ।कोई भी रचना जितना अधिक चित्रात्मक होगा उसके सफलता की संभावना उतना ही अधिक बढ़ जाएगा । संस्मरण–लेखक भी जब स्मृति के आधार पर चित्रात्मक शैली में घटनाओं अथवा व्यक्ति चरित्र का अंकन करता है तो पाठक के समक्ष यह पूरा दृश्य जीवंत हो उठता है । किंतु इस विधा तटस्थता भी उतना ही आवश्यक है अर्थात संस्मरण लेखन में तटस्थता भी अत्यंत आवश्यक तत्व है अर्थात रचनाकार संस्मरण लेखन के साथ तटस्थता पूर्ण व्यवहार करें यह एक अनिवार्य शर्त है जितने संस्मरण कर द्वारा दी गई संपूर्ण जानकारी का मूल्यांकन तथ्यात्मक ढंग से किया जा सके इस विधा में कल्पना का कोई स्थान नहीं होता।

उद्देश्य

साहित्य जगत की सभी विधाएं सोद्देश्य होती हैं। उद्देश्यहीन रचना का कोई प्रयोजन नहीं; कोई प्रतिफल भी नहीं ।इसीमें रचना एवं रचनाकार दोनों की सफलता निहित है । साहित्य जगत की अन्य गद्य विधाएं कहानी, नाटक, उपन्यास तथा निबंध आदि की तरह संस्मरण भी प्रयोजनमूलक रचना है। इसमे रचनाकार उद्देश्य के रूप में आत्मबोध, युगीन परिस्थितियों की झांकी तथा व्यक्ति विशेष के जीवन मे घटित होने वाली घटनाओं को बड़ी ही आत्मीयता के साथ समाज के सामने रख देता है ।और रचना के माध्यम से रचनाकार को अपने प्रधान और गौण दोनों प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति सहज ही हो जाती है जिसमें जीवन के अनेकानेक मूलभूत और ज्वलन्त समस्याओं को प्रकाश में लाकर उसके समाधान प्रस्तुत करने का भी मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

संस्मरण का स्वरूपगत वैशिष्ट्य (विशेषता)

1. संस्मरण का आधार स्मृति है
2. संस्मरण चुँकी स्मृतियों के आधार पर लिखी गई गद्य रचना है अतः इसमें गद्यकर के जीवन में घटित अनुभूत सत्यों पर आधारित रचना कही जा सकती है
3. संस्मरण के वर्ण्यविषय के अंतर्गत विशिष्ट व्यक्ति, वस्तु, घटना, स्थान अथवा जीव–जंतु, पशु–पक्षी आदि भी हो सकता है जिसका आत्मीयता पूर्ण भावात्मक एवं कलात्मक शैली में चित्रण किया जाता है।
4. संस्मरण वर्णन प्रधान जीवनी परक कथेतर नवगद्य विद्या है
5. इसमे संजीव पक्षो के बाहरी रूप के साथ–साथ आंतरिक जीवन चरित्र का भी वर्णन रहता है।
6. यह कल्पना पर नहीं बल्कि यथार्थ वर्णन पर आधारित है।
7. इसमे लेखक अपने निजी जीवनानुभवो को भी अभिव्यक्त करता है जिसके द्वारा वर्णित विशिष्ट व्यक्ति ,वस्तु एवं घटनाओं को पूरी ईमानदारी के साथ पाठक से साझा कर पता है।
8. संस्मरण में यथार्थ का चित्रण होता है परंतु भावात्मक रंगों का विशेष महत्व होता है इसी गुण के कारण रचना आकर्षक जीवंत एवं सर्वग्राह्य हो पार्टी है ।
9. संवेगात्मक चित्रण (व्यक्तिनिष्ठ संस्मरण में) रचना को विश्वसनीय बनाते हैं । साथ ही पाठक एवं संस्मरणकार के बीच एक रागात्मक सेतु निर्मित करने का भी कार्य करते हैं । यही कारण है संस्मरणों का हमारे अवचेतन मन पर अमित छाप अंकित हो जाता है।
10. संस्मरण की भाषा मूलतः पत्रकारिता से संबंधित है अतः इसकी भाषा सरल और अभिभात्मक होती है।

संस्मरणों का वर्गीकरण

डॉ मनोहर मनोरमा शर्मा ने अपनी पुस्तक 'संस्मरण और संस्मरणकार' में संस्मरणों का वर्गीकरण अथवा इसके भेद को आधार बनाकर छह भागों में विभक्त किया है 1– जीवनी प्रधान, 2– यात्रा प्रधान, 3– शिकार प्रधान, 4– ऐतिहासिक, 5– कलात्मक, 6– सामान्य प्रकार के संस्मरण ।

किंतु इस विभाजन के द्वारा स्पष्टता का पूर्ण अभाव दिखाई पडता है । जीवनी, यात्रा तथा शिकार आदि स्वयं मे एक स्वतंत्र गद्यविधा है । संस्मरण का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जुड़ाव उसकी निजी विशेषता है । इसी तरह संस्मरण का आधार स्मृतियों से होना एक स्वाभाविक घटना अथवा तत्व है; ना कि संस्मरण का भेद । किंतु शैली को आधार बनाकर किए गए विश्लेषण के आधार पर इसके नौ भेद किए जा सकते हैं

1. कथात्मक शैली के संस्मरण
2. निबंधात्मक शैली के संस्मरण
3. डायरी शैली के संस्मरण
4. पत्रात्मक शैली के संस्मरण

5. तरंग शैली के संस्मरण
6. वर्णनात्मक शैली के संस्मरण
7. संवादात्मक शैली के संस्मरण
8. सूक्तिपरक शैली के संस्मरण
9. संबोधन शैली के संस्मरण

आधुनिक हिन्दी गद्य विधाएं और संस्मरण का अंतःसंबंध

आधुनिक गद्यविधाओं में संस्मरण एक नितांत स्वतंत्र एवं हृदय ग्राह्य गद्य विधा के रूप में दिखाई पड़ती है । वास्तव में संस्मरण को सभी विधाओं की आधारशिला भी कह सकते है क्योंकि स्मर्ण्यमाण के बिना हम कोई भी रचना शब्दबद्ध कर ही नहीं सकते। यही कारण है कि अन्य गद्य विधाओं जैसे कहानी, डायरी, आत्मकथा, रेखाचित्र, यात्रावृत, जीवनी आदि के साथ संस्मरण का बहुत घनिष्ठ संबंध दिखाई पड़ता है । वास्तव में संस्मरण सभी विधाओं में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अंतर्भूत होता ही है। इस कारण संस्मरण का अन्य गद्य विधाओं के साथ साम्य और वैषम्य की विवेचना करना अपेक्षित जान पड़ता है

संस्मरण और रेखाचित्र का अंतः संबंध

यह दोनों गद्य विधाएं आपस में इतनी अधिक समरूप है कि दोनों के बीच विभेद रेखा खींचना असंभव जान पड़ता है। यही कारण है जो संस्मरण रचना है वही रेखा चित्र भी है और जो रेखाचित्र है वही संस्मरण भी । रेखाओं की विरलता, सघनता, कलात्मकता तथा रंगीलापन आदि के आधार पर जिस प्रकार चित्रकला के क्षेत्र मे रेखाचित्रों में भेद किया जा सकता है उसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में शब्दों की सघनता विरलता संश्लिष्टता एवं बिम्ब प्रधानता के आधार पर शब्द चित्रों में भेद किया जा सकता है । इस आधार पर रेखाचित्र मूलतः दो प्रकार के होते हैं पहला प्रत्यक्ष अनुभूति के आधार पर, और दूसरा स्मृति रूप–विधान के आधार पर गढे जाने वाले रेखाचित्र। इसी आधार पर महादेवी वर्मा के रेखाचित्र और संस्मरण में विभेद रेखा खींचना अत्यंत दुष्कर हो जाता है। इस भाव को स्पष्ट करते हुए डॉक्टर रामचंद्र तिवारी ने इन दोनों विधाओं में अंतर स्पष्ट करते हुए अधिक वैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है। वे लिखते है– " संस्मरण और रेखाचित्र एक दूसरे से मिलती–जुलती गद्य विधाएं हैं। इसका विकास आधुनिक हिंदी गद्य की विशेषता है । संस्मरण किसी स्मर्ण्यमाण (स्मरण किए जा रहे)की स्मृति का शब्दांकन है जिनका स्मरण किया जा रहा है उसके जीवन के वे पहलू वे संदर्भ और वे चारित्रिक विशेषताएं जो स्मरणकर्ता को याद रह जाते हैं उन्हें वह अंकित करता है । स्मरण में वही अंकित रह जाता है जो महत्व,विशिष्ट, विचित्र और प्रिय है । स्मर्ण्यमाण को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है।संस्मरण में विषय और विषयी दोनों ही रूपायित होते हैं। इसीलिए उसमें संस्मरणकर्ता पूर्णतः तटस्थ नहीं रह पाता ।अपने स्व का पूर्ण विसर्जन वह नहीं कर पाता । वस्तुतः वह स्मर्ण्यमाण से संदर्भित अपने स्व का पुनः सृजन करता है । रेखाचित्र में भी किसी व्यक्ति वस्तु के संदर्भ का अंकन किया जाता है यह अंकन पूर्णतः तटस्थ भाव से निर्लिप्त रहकर किया जाता है। रेखाचित्र में रेखाएं बोलते हैं। जिस प्रकार कुछ थोड़ी सी रेखाओं का प्रयोग करके रेखाचित्रकार किसी व्यक्ति या वस्तु की मूलभूत विशेषताओं को उभार देता है उसी प्रकार कुछ थोड़े से शब्दों का प्रयोग करके साहित्यकार किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी मूलभूत विशेषताओं में सजीव कर देता है।"

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि रेखाचित्र सदैव संवेदनात्मक होती है जबकि संस्मरण श्रद्धात्मक । रेखाचित्र का रचनाकार अपनी वर्ण्य विषय का अध्येता व्याख्याता और सूत्रधार सभी कुछ होता है। वैयक्तिक अनुभूत इसकी प्रधान विशेषता है। रेखा चित्र काल्पनिक नहीं बल्कि वाह्भ्यन्तर विशेषताओं की कलात्मक अभिव्यक्ति है जबकि संस्मरण मूलत विवरण आत्मक होते हैं रेखा चित्र में वास्तु परख दृष्टिकोण होता है जबकि संस्मरण में आत्मकारक। रेखाचित्र उपेक्षित तुच्छ किसी चिरपरिचित अथवा साधारण के प्रति उसके व्यक्तित्व कृतित्व अथवा गुणो पर आधारित होता है जबकि संस्मरण में साधारण व्यक्तित्व का भी विमोचन किया जाता है जिससे समाज को दिशा दिया जा सके। दूसरे शब्दों में रेखा चित्र में जहां समाज के दीन हीन पीड़ित प्रताड़ित तथा शोषितों के प्रति करुणा का भाव उत्पन्न करने के लिए लिखा जाता है । वही संस्मरण को समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों घटनाओं अथवा ऐतिहासिक तिथियों स्थलो से संबंध होता है।

रेखाचित्र और संस्मरण का अतिसूक्ष्म अंतर स्पष्ट करते हुए लेखिका उर्मिला मोदी लिखती हैं– रेखाचित्र एक बार देखे हुए व्यक्ति का भी हो सकता है जिसमें व्यक्तित्व की क्षणिक झलक मात्र मिल सकती है। इसके अतिरिक्त इसमें लेखक तटस्थ भी रह सकता है । हमने किसी को क्रोध की मुद्रा में देखा और किसी अन्य मुद्रा में देखने का अवसर नहीं मिल सका । ऐसी स्थिति में हम तटस्थ भाव से उसकी क्रोधित मुद्रा का ही रेखाचित्र दे सकेंगे और तटस्थ भी रह सकेंगे । यह प्रकरण हमारी स्मृति में खो भी सकता है परंतु 'संस्मरण' हमारी स्थाई स्मृति से संबंध रखने के कारण संस्मरण के पात्र से हमारे घनिष्ठ परिचय की अपेक्षा रखता है, जिसमें हमारी अनुभूति के क्षणों का योगदान भी रहता है इसी कारण स्मृति में ऐसे क्षणों का प्रत्यावर्तन भी सहज हो जाता है और हमारा आत्मकथ्य भी आ जाता है।""

संस्मरण और आत्मकथा का अंतः संबंध

संस्मरण और आत्मकथा का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है 'अपनी कथा' ही आत्मकथा है। जिसका बीज तत्व संस्मरण है ।जब अपने ही जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं अथवा अनुभूत जीवन सत्यों का विवरण अत्यंत व्यवस्थित शृंखलाबद्ध एवं कलात्मकता के साथ रचनाकार द्वारा प्रस्तुत कर दिया जाता है ऐसी रचना आत्मकथा कहलाती है। दूसरे शब्दों में आत्मकथा लेखक के जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज होता है। जो उसे यश कीर्ति और धन के साथ–साथ पाठक अथवा समाज को दिशा प्रदान करने में भी सहायक होती है ।आत्मकथा का रचना तंतु संस्मरण के सूक्ष्म रेशों से निर्मित होता है ।यही कारण है आत्मकथा और संस्मरण दोनों ही विधाओ का उद्देश्य अपने जीवन अनुभवों से पाठक अथवा समाज को परिचित कराना होता है जिससे वह अपने जीवन मे लाभ उठा सके। इन दोनों विधाओं के अंतर को मूल्यांकित करते हुए लेखिका उर्मिला चौधरी लिखती हैं–" आत्मकथा और संस्मरण भी एक नहीं है ।आत्मकथा का संबंध जीवन के पूरे विस्तार से होता है ।उसमें बीच–बीच में संस्मरणात्मक प्रसंग आ सकते हैं । संस्मरण अपने आप में एक पूर्ण विकसित गद्य विधा है। संस्मरण में स्मर्ण्यमाण ही केंद्र में होता है, जबकि आत्मकथा में अन्य संदर्भ गौण होते हैं। कथा लेखक केंद्र में होता है । दूसरों को वह इसलिए स्मरण रखना है कि वे उसके आत्म विकास एवं विस्तार के साक्षी होते हैं।

संस्मरण और आत्मकथा के अंतर्संबंध को यदि और अधिक विवेचित किया जाए तो एक वाक्य में यही कहा जा सकता है कि दोनों ही विधाएं जीवन को पीछे मुड़कर देखने वाली रचना है। आत्मनिष्ठ और स्मर्ण्यमाण को स्वर प्रदान करना दोनों ही विधाओं का मूल ध्येय है। अंतर इतना ही है कि संस्मरण लेखक अपनी दृष्टि से किसी अन्य के जीवन को देखता है। उसे मूल्यांकित

करता है । किंतु आत्मकथाकर तटस्थता के साथ पूर्ण निष्ठावान होकर क्रमबद्ध तरीके से अपने ही जीवन की झांकियां को पाठक के सामने सम्पूर्णता के साथ परोस देता है ।दूसरी ओर संस्मरणकार को यह छूट होती है कि वह जीवन के महत्वपूर्ण बिंदुओं को ही पाठक के सामने रखें उसके लिए क्रमबद्धता की अनिवार्यता नहीं होती। वास्तव में संस्मरणकार की दृष्टि सदैव चयनात्मक होती है। वह उन्ही क्षणों को शब्दरूप देता है जो उसे बिताए गए क्षणों में अत्यधिक आंदोलित किए होती है। साहित्यकार अरुण प्रकाश ने अपनी रचना 'गद्य की पहचान' में इसे बहुत ही व्यवस्थित ढंग से स्पष्ट किया है –"संस्मरण आत्मकथा ही है ।अलबत्ता वह समग्र आत्मकथा के मुकाबले छोटा होता है ।संस्मरण में अतीत के खास क्षणों, मोड़ों को फिर से जीवंत करने की कोशिश होती है। दूसरे शब्दों में संस्मरण आत्मकथा का कच्चा माल है और किसी की जीवनी के लिए स्रोत सामग्री ।"

समकालीन साहित्यकारों ने भी अपनी लेखनी से आत्मकथात्मक साहित्य को समुन्नत किया है । इस क्रम में भीष्म सहनी कृत 'आज के अतीत(2003) , राजेंद्र यादव कृत 'मुड़–मुड़ के देखता हूं' (2001), स्वदेशदीप की रचना 'मैंने माँडू नहीं देखा' (2003), प्रभा खेतान कृत 'अन्या से अनन्या' (2007), चंद्रकिरण सोनरेक्सा कृत 'पिजडे की मैंना' (2008) डॉ तुलसीराम कृत 'मुर्दहिया' (2010)और 'मणिकर्णिका' (2010), सुशीला टांक भौरे कृत 'शिकंजे का दर्द' (2012), और निर्मला जैन कृत 'जमाने से हम' (2015) आदि रचनाओं ने आत्मकथा विधा को उच्चस्थान प्रदान करने में माहिती भूमिका निभाई है ।

संस्मरण और जीवनी का अंतः संबंध

संस्मरण और जीवनी दोनों ही विधाएं मूलतः व्यक्तिपरक लेखकीय घटना है । रचनाप्रक्रिया अथवा वाह्यकलेवर के स्तर पर संस्मरण और जीवनी दो भिन्न गद्य विधाएं हो सकती हैं फिर भी दोनों में बहुत सी एकरूपता भी है । जिस कारण दोनों के बीच विभेद रेखा खींचना दुष्कर कार्य है । संस्मरण मानव जीवन को समग्रता के साथ प्रतिबिंबित नहीं करता जबकि जीवनी लेखक जीवन को वृहद रूप में सम्पूर्णता के क्रमवार प्रस्तुत करने का प्रयास करता है ।संस्मरण में रचनाकार की सत्यता और आत्मिक संलिप्तता अनिवार्य शर्त है अर्थात संस्मरणकार किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन से संबंद्ध घटनाओं अथवा उसके साहचार्य का प्रत्यक्ष साक्षी होता है; जबकि साहित्य जगत में ऐसी अनेकों जीवनी मिल जाएंगी जिससे रचनाकार का कोई प्रत्यक्ष सरोकार नहीं था । यहां तक ऐसी भी रचनाएं मिलती हैं जो उसे विशिष्ट व्यक्ति के मरणोपरांत लिखी गई है । सत्यनिष्ठा जीवनी का प्राण तत्व है । इसमें अनर्गल प्रलाप का कोई स्थान नहीं है । इस संबंध में साहित्यकार अरुण प्रकाश जी लिखते हैं "सत्य तक पहुंचाने की चाह ही पाठकों को जीवनी की ओर आकृष्ट करती है पर यदि सत्य की प्रस्तुति ही अविश्वसनीय हो, प्रस्तुति में कलात्मक च्युति हो तो सत्य असत्य बनकर रह जाता है।:

जीवनी मूलतः वस्तुपरक रचना है । विभिन्न संस्मरणों, पत्र–पत्रिकाओं, साक्षात्कार,उपलब्ध–विवरण, कुल–वंश परंपरा आदि के प्रपत्रो द्वारा अर्जित सामग्रियों को आधार बनाकर भी जीवनी लिखी जा सकती है। जबकि संस्मरण के साथ ऐसा नहीं है । संस्मरण लेखन मे निरपेक्षता का भाव बिल्कुल नहीं के बराबर होता है। जीवनी में चुने गए व्यक्तित्व के गुण–दोष दोनों क्रमबद्ध तरीके से अंकित किए जाते है जबकि संस्मरण में क्रमबद्धता आवश्यक नहीं होती है ।अपितु साथ बिताए गए रोचक क्षणों का चित्रण होता है । संस्मरणकार की तटस्थता के संबंध में महादेवी वर्मा लिखती है –"अपने अग्रजो सहयोगियों के संबंध में अपने आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होगा ।मैंने साहस तो किया है पर ऐसे संस्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगता मेरे लिए संभव नहीं है। मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वह जैसे दिखाई देते हैं उससे वह बहुत उज्ज्वल और विशाल हैं । इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे"। संस्मरण लेखक के लिए तटस्थता किसी भी रूप में संभव नहीं है इसे महादेवी जी ने स्पष्ट कर दिया है।

संस्मरण और यात्रावृत्त का अंतः संबंध

ये दोनों गद्य विधाएं तत्वतः एक ही है। कुछ विद्वान तो इसे 'यात्रा संस्मरण' के नाम से भी उद्बोधित करते हैं। विभेदरेखा के रूप में मात्र इतना ही कहा जा सकता है कि यात्रावृत में रचनाकार जहाँ सामायिक अनुभूतियों, देखे गए प्रत्यक्ष दृश्यो तथा संबंधित घटनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता चलता है ; वही संस्मरण में लेखक भूतकालिक अनुभूतियों को वर्तमान में जीवंत कर उसे शब्दांकित कर देता है। रचनाकार की संलिप्तता और संवेदना इन दोनों ही गद्य विधाओं में बराबर होती है । अनुभूत सत्यों को उजागर कर देना दोनों ही रचनाओं का अभिधेय होता है। इसी भाव को और अधिक स्पष्ट करते हुए अरुण प्रकाश जी लिखते हैं जी लिखते हैं–– "यात्रा आख्यान आईना है । यात्रा के सुख–दुख उसकी विश्वसनीयता के उपकरण और सादा बयानी उसके हुनर। सारे अनुभवों का सटीक वर्णन तो असंभव है फिर भी आईना बनाने की कोशिश यात्रा आख्यान में देखनी चाहिए। यात्रा में थकान तो होती है, पर यात्री के भीतर रोजमर्रापन की ऊब; उससे उबरने की बेचौनी को खत्म करती है । बुझे–बुझे मन को उत्साह और जीवंतता से भर देती है । यात्रा की प्रवृत्ति ही परिवर्तनकारी है। हर यात्रा में एक नया आयाम जोड़ देता है।"

संस्मरण और रेखाचित्र के स्वरूपगत अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हुए डॉक्टर हरिमोहन जी अपनी पुस्तक 'साहित्यिक विधाएं रू पुनर्विचार' में लिखते हैं– "संस्मरणों में जहां स्थाई अथवा अमिट स्मृतियों का आंकलन होता है। वहीं यात्रावृतांत में सामूहिक स्मृतियों को बिम्बियित किया जाता है । यात्रावृतांत का लेखक या तो अपनी यात्रा के मध्य डायरी के रूप में अपनी यात्रा के विवरण अंकित करता चलता है, या फिर यात्रा से लौटकर कुछ ही समय के अंतराल में या तुरंत यात्रा के मध्य देखे गए स्थानो, प्राकृतिक दृश्यों आदि से संबंध विवरण कलात्मक रूप से अंकित कर देता है ।

संस्मरण और डायरी का अंतः संबंध

हिंदी साहित्य कोश में डायरी के संबंध में इस प्रकार से बताया गया है– "डायरी सीमित में तो कॉपी नोटबुक या पुस्तिका है जिसमें हर रोज की घटनाओं का या दिन भर में किए गए कार्यों का लेखा–जोखा रखा जाए पर प्रचलित अर्थ में डायरी दैनिक व्यापारों का घटनाओं का बुरा है डायरी में लोग अपने कुछ या सब अनुभव तथा निरीक्षकों का दैनिक विवरण रखते हैं"

डायरी के संबंध में कुछ विद्वानों का मानना है कि डायरी विधा पाश्चात्य साहित्य की देन है, किंतु ऐसा नहीं है। डायरी लेखन की परंपरा भारतीय साहित्य जगत में बहुत पहले से दिखाई देता है। वास्तव में 'डायरी' शब्द अंग्रेजी भाषा का शब्द है । उर्दू मे इसे रोज़मर्रा या रोज़नामचा आदि नाम भी दिया गया है । वैसे हिंदी में इसे दैनंदिन, दैनिकी और वासरिका आदि नाम से जाना जाता है। जहां तक संस्मरण और डायरी के अंतःसंबंध की बात है। ये दोनों ही गद्य विधाएं भूतकालिक अनुभवों को पन्नों पर साझा करने वाली एक सजातीय विधा है। संस्मरण में जहां

लेखक कुछ विशिष्ट व्यक्तियों,घटनाओं, स्थानो तथा दृश्यो आदि के विषय में अपने अनुभव को बताता है । वहीं डायरी में लेखक नित्य प्रति की घटनाओं को तारीखों के साथ पाठक को भी अपना सहयात्री बना लेता है । डायरी में संस्मरण की अपेक्षा अधिक ताजगी का बोध होता है,जबकी संस्मरणकार अतीत की घटनाओं को वर्तमान में पुनर्जीवित करता है । प्रसिद्ध साहित्यकार रामचंद्र तिवारी के शब्दों में –"जब कहीं किसी गद्य विधा में एकांत क्षणों की स्मृतियों को शब्दबद्ध करने की आवश्यकता जान पड़ती है, तब इस विधा का प्रयोग कर लिया जाता है । अब तो इस विधा में छोटी–छोटी कविताएं भी समाविष्ट की जा रही हैं। इससे अनुभूति और चिंतन को घनत्व प्राप्त हो जाता है।"

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्मरण एक स्वतंत्र विधा होने के साथ–साथ उसका अन्य गद्येतर विधाओं से घनिष्ठ संबंध है। संस्मरण का संबंध रिपोर्ताज, यात्रावृत, डायरी तथा साक्षात्कार आदि सभी आधुनिक गद्य विधाओं से विशेष रूप से है क्योंकि इन सभी के मूल में कहीं ना कहीं इस स्मर्ण्यमाण का ही ध्वनि व्यंजित होता है बिना संस्मरण के इनको शब्द रूप देना असंभव जान पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ गोविंद त्रिगुणायन शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत भाषा साहित्य भंडार दिल्ली 1974 पृष्ठ संख्या 497
2. महादेवी वर्मा 'अतीत के चलचित्र' भारती भंडार इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 02 (14वां संस्करण)
3. बनारसी दास चतुर्वेदी "संस्मरण" भारतीय काशी प्रकाशन संस्करण 1992 पृष्ठ संख्या
4. 'हिंदी साहित्य कोश' संपादक धीरेंद्र वर्मा, भाग–2 (ज्ञान मंडल लिमिटेड) वाराणसी, पृष्ठ संख्या–––794
5. 'साहित्य के रूप' डॉ राजमणि शर्मा, पृष्ठ संख्या 204
6. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका
7. ले0 रामचंद्र तिवारी 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पृष्ठ संख्या 70
8. बनारसी दास चतुर्वेदी 'संस्मरण' भारतीय काशी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 04
9. हिंदी का गद्य साहित्य ले0 रामचंद्र तिवारी पृष्ठ संख्या 297
10. 'संस्मरण और रेखाचित्र' संपादक उर्मिला मोदी अनुराग प्रकाशन वाराणसी पृष्ठ संख्या 01
11. 'रेखाचित्र और संस्मरण' संपादक उर्मिला मोदी अनुराग प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ संख्या 3 'रेखाचित्र और संस्मरण' संपादक उर्मिला मोदी अनुराग प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ संख्या 3
12. 'गद्य की पहचान' लेखक अरुण प्रकाश पृष्ठ संख्या 152
13. अरुण प्रकाश गद्य की पहचान आंतिका प्रकाशन संस्करण 2012 पृष्ठ संख्या 121
14. महादेवी वर्मा पथ के साथीश श्दो शब्दश से
15. 'गद्य की पहचान' ले० अरुण प्रकाश अन्तिका प्रकाशन (संस्करण 2012)पृष्ठ संख्या 69
16. डा0हरिमोहन साहित्यिक विधाएं रूपुनर्विचार वाणी प्रकाशन (नई दिल्ली) संस्करण 2005 पृष्ठ संख्या 274
17. 'हिंदी साहित्य कोश' भाग–1 ले0डॉ धीरेंद्र वर्मा ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी (संस्करण 2020)पृष्ठ संख्या 346
18. रामचंद्र तिवारी हिंदी गद्य का साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी संस्करण 2016 पृष्ठ संख्या 563